Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान हाई कोर्ट

कनिष्ठ न्यायिक सहायक एवं लिपिक ग्रेड -II
चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

राजस्थान का इतिहास, कला संस्कृति एवं भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान का परिचय 1
2. प्राचीन राजस्थान का इतिहास 1
   - प्राचीन सभ्यताएं
3. मध्यकाल राजस्थान का इतिहास 8
   - प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएं
4. आधुनिक राजस्थान का इतिहास 43
   - 1857 की क्रांति
   - प्रमुख किसान आन्दोलन
   - प्रमुख जनजातीय आन्दोलन
   - प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन
   - राजस्थान का एकीकरण
5. राजस्थान कला एवं संस्कृति 55
   - राजस्थान के त्यौंहार
   - राजस्थान के लोकदेवता
   - राजस्थान की लोक देवीयाँ
   - राजस्थान के लोक सन्त
   - राजस्थान के लोकगीत
   - राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ
   - राजस्थान के संगीत
   - राजस्थान के लोक नृत्य
   - राजस्थान के लोकनाट्य
   - राजस्थान की जनजातियाँ
   - राजस्थान की चित्रकला
   - राजस्थान की हस्तकलाएँ
   - राजस्थान का साहित्य एवं प्रकार
   - राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ
6. राजस्थान की स्थापत्य कला 93
   - किले एवं स्मारक
   - राजस्थान के जिले एवं धार्मिक स्थल
7. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व 102
8. राजस्थान खान-पान एवं वेश-भूषा 106

राजस्थान का भूगोल

1.	राजस्थान की उत्पत्ति, स्थिति, विस्तार एवं क्षेत्रफल	110
2.	राजस्थान भौतिक प्रदेश	114
3.	राजस्थान का अपवाह तंत्र	123
4.	राजस्थान की झीलें	130
5.	राजस्थान की जलवायु	133
6.	राजस्थान में मृदा संसाधन	138
7.	राजस्थान में वन-संसाधन एवं वनस्पति	142
8.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	145
9.	राजस्थान के ऊर्जा स्त्रोत	152
10.	राजस्थान में पशुधन	159
11.	राजस्थान में कृषि एवं सिंचाई परियोजनाएँ	163
12.	राजस्थान की जनसंख्या	171
13.	राजस्थान में वन्यजीव एवं संरक्षण	174
14.	राजस्थान में उद्योग	178

राजस्थान G.K.

राजस्थान का इतिहास – एक परिचय

→ 1949 ई. से पूर्व राजस्थान राज्य अस्तित्व मे नही था ।

→ 1800 ई. में सर्वप्रथम जॉर्ज थॉमस ने इस भू भाग के लिए ''राजपुताना'' शब्द का प्रयोग किया था;

→ 1829 ई. में ''एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान'' के लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने इस पुस्तक में इस प्रदेश का नाम ''रायथान'' अथवा ''राजस्थान'' रखा ।

→ 30 मार्च 1949 ई. को स्वतन्त्रता पश्चात प्रदेश की विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ और इस प्रदेश का नाम राजस्थान सर्वसम्मिति से स्वीकार किया गया ।

प्राचीन काल से ही राजस्थान विभिन्न क्षेत्रों के भिन्न भिन्न नाम मिलते है, जिन्हे हम दो प्रकार से बांट सकते है।

(1) प्राचीन काल एवं अभिलेखो के अनुसार नाम

प्राचीन नाम	–	वर्तमान नाम
मरू, धन्व	–	जोधपुर संभाग (मरूस्थल)
जांगल	–	बीकानेर –नागौर
मत्स्य	–	जयपुर,अलवर,भरतपुर
शुरसेन	–	धौलपुर–करौली

नोट:–

मरू, धन्व, जांगल, मत्स्य, शुरसेन का उल्लेख ऋग्वेद मे भी मिलता है।

→ शुरसेन, मत्स्य का उल्लेख महाभारत मे भी मिलता है ।

(2) भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नाम:–

कांठल	–	प्रतापगढ का क्षेत्र माही नदी के आस–पास
छप्पन का मैदान	–	बांसवाडा–प्रतापगढ के मध्य का भू भाग
ऊपरमाल	–	भैंसरोढगढ से लेकर बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र
गिरवा	–	उदयपुर के आस पास का पहाडी क्षेत्र
मॉड	–	जैसलमेर
वागड	–	डूंगरपुर बांसवाडा
हाडौती	–	कोटा–बूँदी
शेखावाटी	–	सीकर झुन्झुनू, चुरू

प्राचीन राजस्थान का इतिहास

इतिहास का विभाजन

सम्पूर्ण इतिहास को तीन भागों (कालों) में विभक्त किया गया है।

काल खण्ड		
प्रागैतिहासिक काल	आद्य ऐतिहासिक काल	ऐतिहासिक काल
इतिहास जानने हेतु लिखित साक्ष्य उपलब्ध नही अर्थात मानव लेखन शैली से परिचित नही।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित परन्तु उस लिपि को अभी तक पढा नही जा सकता है ।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित था । इस काल के स्पष्ट एवं सुपठित लिखित साक्ष्य उपलब्ध है।
इतिहास जानने का स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य एवं उपकरण अथवा सामग्री है।	इन अर्थो मे भारतीय इतिहास को इस प्रकार से विभक्त कर सकते है।	
मानव आदिम था, मायावरी जीवन जीता था	1. प्राक युग – सृष्टि के आरम्भ से हडप्पा सभ्यता के पूर्व तक था ।	
आखेट पर जीवन निर्वाह करता था	2. आद्य युग– हडप्पा सभ्यता –600**BC**	
आग जलाना सीख चुका था ।	3.ऐतिहासिक–600**BC** –वर्तमान तक	

प्रागैतिहासिक राजस्थान अथवा प्राक युग मे राजस्थान

→ मानव सभ्यता के उदभव के काल को पाषाण काल कहते है जो इस प्रकार विभक्त है

(1) पूर्व पाषाण काल
(2) मध्य पाषाण काल
(3) उत्र/नव पाषाण काल

→ चूंकि राजस्थान प्राचीनतम भू भागों में से एक होने के कारण मानव सभ्यता का जन्म स्थल रहा है।
→ राजस्थान मे मानव सभ्यता के प्राचीनाम् साक्ष्य नदी घाटियो में देखने को मिलते है।

नोटः- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का सर्वप्रथम क्षेय एच.सी.एल. क्लाइल को दिया जाता है।

राजस्थान मे पूर्व पाषाणकालीन प्रमुख स्थल निम्न हैः-

→ अजमेर, अलवर, चितौड., भीलवाडा, जयपुर, झालावाड., जालौर, जोधपुर, पाली, टोंक आदि ।
→ नदीः- चम्बल, बनास, लूणी एवं उनकी सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए ।

मध्य पाषाण कालः- इस काल के साक्ष्य निम्न स्थानो से प्राप्त हुए है।

→ प्रमुख स्थलः- बागौर-भीलवाडा बेडच (चितौड), तिलवाडा-बाडमेर, विराट-जयपुर (विराट नगर)
→ नदीः- लूनी एवं सहायक नदी
→ उपकरणः-ब्लेड, इन्द्रोवर, ट्रायएंगल, क्रेसेन्ट, ट्रेपेज, स्क्रेपर, प्लाइटर आदि ।
→ ये उपकरण-डैस्पर, एगेट, चर्ट, कार्नेलिपन, कक्वार्टजाइट, कल्सेडोनी आदी पाषाणों के बने होते थे ।

नोटः-

निम्न स्थानो से शैलाक्षय चित्र मिले हैः-

→ बूंदी- छाजा नदी क्षेत्र, विराटनगर-जयपुर
→ कोटा- अरनिया क्षेत्र, हरसौरा-अलवर
→ सोहनपुरा-सीकर, दर - भरतपुर

उत्तर(नव)पाषाण कालः- भारत के अन्य भागों की तरह राजस्थान में भी इस काल के साक्ष्य मिलते है।

स्थलः- अजमेर, नागौर, सीकर, झुन्झुनू, जयपुर हनुमानगढ (कालीबंगा), उदयपुर (आहड गिलूक), चितौड, जोधपुर आदि ।

राजस्थान में धातु कालः- इस काल को तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

ताम्र पाषाण	लौह काल	चित्रित मृद भाण्ड संस्कृति **(PGW)**
तम एवं ताम्र-कांस्य काल (केवल ताम्र पाषाण या कास्य उपकरण मिले) स्थल-गणेश्वर (सीकर) कालीबंगा (हनुमानगढ) गिलूण्ड (राजसमन्द) आहड व झाडौल (उदयपुर) पिण्ड पाडलियाँ (चित्तौड) कुराडा (नागौर)। सावनियाँ व पुगल (बीकानेर) नन्दलालपुरा, किराउत, चीथवाडी (जयपुर) कौल माहौली (सवाई माधोपुर) बुढापुष्कर (अजमेर) मलाह (भरतपुर)	लौंहे का आविष्कार स्थलः- नोह (भरतपुर) जोधपुर (जयपुर) नगर सुनारी (झुझुनू) भीनमाल रैढ (टोंक) सांभर (जयपुर) नोटः- नोह से प्राप्त लौंह अवशेष भारत मे लौंहयुग आरम्भ होने की सीमा रेखा निर्धारित करने के महत्वपूर्ण स्त्रोत है। चक 84, तखानवाला गंगानगर, अनुपगढ (बीकानेर)	सलेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति का उदय । स्थलः- विराट नगर व जोधपुर (जयपुर) सुनारी नोह

राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ:-

बागौर:-
- अवस्थितिः- भीलवाडा (राजस्थान)
- नदी:- कोठारी (महासतियाँ नामक जगह पर ।)
- उत्खननकर्ताः- डॉ. वी. एन. मिश्र (1967-70) द्वारा डेक्कन कॉलेज पूना के सहयोग से एवं लैश्विक महोदय

सामग्रीः- प्रागैतिहासिक काल के साक्ष्य मिले है।

→ 4000BC-5000BC पुरानी सभ्यता है।

→ यह सभ्यता तीन स्तर की है।

1. प्रथम स्तर- 4180-3285BC
2. दूसरा स्तर- 2750BC-500BC
3. तीसरा स्तर- 500BC- वर्तमान तक

→ बडी संख्या मे लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए है।

→ शिकार/आखेट द्वारा जीवन निर्वाह के साक्ष्य मिलते है।

→ यहां से तांबे के उपकरण भी मिलते है, जिसमें प्रमुख उपकरण छेद वाली सुई है।

→ यहां से कृषि एवं पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है।

→ यहां तीसरे स्तर की खुदाई मे लौह उपकरणों के साथ चाक पर बने बर्तन एवं मृदभाण्डों के साक्ष्य मिले है।

→ यहां मकान बाने के लिए पत्थर के साथ ईंटों का प्रयोग किया गया है।

→ बागौर के निवासी शवों को उत्तर दक्षिण दिशा मे दफ्नाते थे ।

→ बागौर को "मध्य पाषाण काल सभ्यता का घर" कहा जाता है।

तिलवाडा:-
- अवस्थितिः-बाडमेर
- नदी- लूणी नदी
- उत्खननन कर्ताः-

सामग्रीः-

→ यहां से 5 आवास स्थलों के साक्ष्य मिले है।

→ यह सभ्यता भी बागौर सभ्यता के समकालीन थी, अतः यहां से भी पशुपालन के साक्ष्य मिलते है।

→ यहां से एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव एवं पशुओं के अस्थि अवशेष मिले है।

→ यहां पर चाक से बने स्लेटी एवं लाल रंग के मृदभाण्ड मिले है।

→ वी.एन. मिश्र ने इस सभ्यता का काल 500BC-200BC माना है।

→ पाषाणकालीन सभ्यता के अन्य स्थल निम्न है। जायल, डीडवाना (नागौर) बुढा पुष्कर (अजमेर)।

कालीबंगा:-
- अवस्थिति- हनुमानगढ
- नदी-घग्घर/सरस्वती/दृषद्वती/चौतांग
- उत्खननकर्ता- अमलानन्द घोष (1952)अन्य सहयोगी- बी. बी. लाल बी. के. थापर जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
- शाब्दिक अर्थ- काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
- उपनाम- दीन हीन बस्ती- कच्ची ईंटों के मकान ।

सामग्रीः-

→ सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।

→ युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।

→ एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शोधन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।

→ जुते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों ।

→ मकान कच्ची ईंटों के थे बल्लियो की छत होती थी ।

→ जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही की ।

→ ईंटों को धूप से पकाया जाता था ।

→ वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।

→ लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीचीं गई है ।

→ यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है।

→ यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है।

→ यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है।

→ यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।

→ यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।

→ इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।

→ यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है।

→ अन्य सामग्रीः- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदिः

→ 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है।

नोट:- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

सोथी:-
अवस्थिति- उदयपुर
उपनाम- कालीबंगा प्रथम भी कहा जाता है ।
ए. एन. घोष ने इसे सम्पूर्ण हडप्पा सभ्यता का उद्गम स्थल कहा है ।

नोट:- हडप्पा सभ्यता के अन्य स्थल- पुंगल एवं सोबनिया है।

आहड:-
अवस्थिति:- उदयपुर
नदी- आहड (आयड) या बेडच के किनारे
उपनाम:- ताम्रवती नगरी (ताम्र उपकरणों के कारण) बनासनीयन सभ्यता (बनास की सहायक नदियों पर स्थित) धूलकोट-(स्थानीय नाम मिट्टी का टीला)
मृतकों का टीला-(मृतप्राय सभ्यता के कारण)
अघाटपुर-(प्राचीन नाम)
उत्खननकर्ता:- अक्षयकीर्ति व्यास सर्वप्रथम 1953 ई. में ।
सहयोगी:- रतनचन्द्र अग्रवाल
एच.डी. सांक लिया, वी. एन. मिश्र

सामग्री:-

→ यहां से 4000BC प्राचीन प्रस्तर युगीन सभ्यता के अवशेष मिले है ।
→ यह 8 स्तर की सभ्यता है, जिसके चौथे स्तर से ताँबें की दो कुल्हाडियाँ मिली है ।
→ यहाँ से एक घर मे 6-8 चूल्हे मिले है, सम्भवत: सामुहिक भोज अथवा संयुक्त परिवार का प्रचलन रहा होगा ।
→ यहाँ से एक युनानी मुद्रा मिली है जिस पर अपोलो (सूर्य का देवता) का अंकन है।
→ बिना हत्थे के जलपात्र मिले है जो फारस (ईरान) से सम्बन्ध को दर्शाते है।
→ यहाँ के लोग पत्थरो की नीव एवं ईटों की दीवार बनाते थे, मकान पर छत बाँस का होता था ।
→ ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
→ नालियों के अवशेष भी मिलते है ।
→ यहां से काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड मिले है ।
→ इन मृदभाण्डों मे लोग अनाज रखते थे जिन्हे स्थानीय भाषा में गोरे या कोठ कहा जाता है ।
→ पशुपालन यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था ।
→ यहां से एक बैल की मृण्मूर्ति मिली है जिसे "बनासीयन बुल" की संज्ञा दी गयी है ।
→ यहां के लोग आभूषणों सहित शवों को दफनाते थे संभवत: मृत्यु के बाद भी जीवन मे विश्वास रखते थे ।
→ आहड से ताँबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुई है ।
→ यहां उत्खनन मे ठपे प्राप्त होने से रंगाई छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान लगाया जाता है ।
→ अन्य सामग्री मे ताँबे की 6 मुद्राए, ताँबे की कुल्हाडियाँ अंगूठियाँ, चुडियाँ पत्थर के मनके, चटूरे इत्यादि प्राप्त हुए है ।
→ गोपीनाथ शर्मा ने आहड सभ्यता का स्वर्णकाल 1900BC-1200BC माना है ।

रंग महल:-
अवस्थिति:- हनुमानगढ
नदी:-घग्घर सरस्वती/चौताग/दृषद्वती
उत्खनन:- श्रीमति हन्नारिड (स्वीडिश)-1952-54
रंगमहल:-लाल रंग के पात्रों पर काले रंग की डिजायन की गई है अत: नाम रंगमहल पडा ।

सामग्री:-

→ यहाँ घण्टाकार मृदपात्र, टोटीदार घडे, कटोरे, बर्तनों के ढक्कन, दीपदान एवं बच्चो की खिलौनों की पहियेदार गाडीयाँ इत्यादि मिली है ।
→ यह स्थल कुषाणकालीन सभ्यता के समकालीन है। क्योंकि यहां से कुषाणकालीन सिक्के एवं मिट्टी की मुहरे मिली है ।
→ यहां से गुप्तकालीन खिलौने भी मिले है ।

बालाथल:-
अवस्थिति:-वल्लभनगर उदयपुर)
नदी:- आयड/बेडच के किनारे स्थित
उत्खननकर्ता:-वी.एन. मिश्र (1994-2000)
अन्य सहयोगी:-वी. एस सिंह आर. के. मोहनत देव

सामग्री:-

→ यहां 3000BC-2500BC पुरानी सभ्यता है ।
→ यह एक ताम्रपाषाणिक सभ्यता है
→ यहां के लोग मिट्टी के बर्तन एवं कपडा बुनना जानते थे ।
→ यहां से एक दुर्गनुमा भवन एवं 11 कमरों वाला विशाल भवन भी मिला है ।
→ यहां के निवासियों का सम्पर्क हडप्पा सभ्यता से होने के पुख्ता प्रमाण मिलते है ।
→ यहां से मिट्टी का बना साँड की आकृति मिली है ।

यहां एक नलकूप एवं 5 लोहा गलाने की भट्टियों के साक्ष्य भी मिलते है

गिलूण्डः– अवस्थितिः– राजसमन्द
नदीः– बनास उत्खननकर्ताः–बी. बी. लाल (1957–58)
अन्य सह उत्खननकर्ताः– बी. एस. शिन्दे पूना
ब्रोगरी
फेशल
अमेरिका
1998–2008
उपनामः–बनास संस्कृति

सामग्रीः–
→ ताम्रयुगीन सभ्यता है, जिसका समय 1900BC-1700BC निर्धारित किया गया है ।
→ यहां से पांच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले है । (1) सादे (2) काले (3) पालिशदार (4) भूरे (5) लाल एवं काले
→ यहां पक्की हुई ईटों का प्रयोग किया गया है । यहां से मिट्टी के खिलौने पत्थर की गोलियाँ एव हाथी दांत की चुडियों के अवशेष मिले है

ओझनियाः– अवस्थितिः– भीलवाडा
उत्खननः–भारतीय सर्वेक्षण विभाग (2000 ई.)

सामग्रीः–
→ यहां की भवन संरचना के आधार पर तीन स्तर की सभ्यता की जानकारी मिलती है ।
→ सभी स्तरों पर काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड सफेद रंग से चिन्हित है तथा बनाने की विधि भी अलग है ।
→ गाय एवं बैल की मृण्मूर्तियाँ, ताँबे की चुडियाँ, खिलौना, गाडी के पहिये, प्रस्तर हथौडा एवं कार्नेलियन फियास मिला है।

गणेश्वरः– अवस्थितिः– नीम का थाना (सीकर)
नदी– कॉतली
उत्खननकर्ता :–R.C. अग्रवाल 1977

सामग्रीः–
→ यहां से 2800BC पूर्व की ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते है ।
→ इतनी प्राचीन ताम्रयुगीन सभ्यता भारत मे दूसरी नही है अतः इसे ''ताम्रयुगीन सभ्यताओ की जननी'' कहा जाता है ।
→ यहां से प्राप्त ताम्र उपकरणों मे 99 प्रतिशत तांबा है ।
→ यहां मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए है, जिन्हे कपीषवर्णी मृदपात्र कहा जाता है ।
→ यह बर्तन काले एवं नीले रंग से सजाएं हुए है
→ यहां से ताँबा का निर्यात हडप्पा सभ्यता को किया जाता था ।
→ यहां से कुल्हाडी, तीर, भाले, सुईयाँ चुडियाँ एवं मछली पकडने का कांटा भी प्राप्त हुआ है ।

बैराठः– अवस्थिति–जयपुर
नदी– बाण गंगा
उत्खननकर्ता–दयाराम साहनी (1936–37)
अन्य उत्खननकर्ताः–कैलाशनाथ दीक्षित एवं नीलरत्न बनर्जी
यह एक लौह युगीन सभ्यता है

अन्य विशेषताएँ एवं सामग्रीः–
→ बैराठ प्राचीन मत्स्य जनपद की राजधानी थी ।
→ यहां बीजक की पहाडी, भीमजी की पहाडी (मोतीडुंगरी), महादेव जी की पहाडी उल्लेखनीय है, जहां से पुरातात्विक सामग्री प्राप्त होती है ।
→ महाभारत काल मे पाडवों ने यहां अज्ञातवास काटा था ।
→ यहां पर मौर्यकाल एवं बाद के काल के अवशेष मिलते है ।
→ एक भांड मे सूती वस्त्र से बंधी कुल 36 मुद्राएं मिली है, जिसमे से 8 मुद्राएं पंचमार्क (आहत) मुद्राए है । शेष 28 मुद्राए इण्डो ग्रीक शासको की है ।
→ यहां पर बडी संख्या में लौह सामग्री भी मिली है ।
→ 1999 मे उत्खनन मे यहां मौर्यकालीन गोल बौद्ध मन्दिर मठ, स्तूप के साक्ष्य मिले है जो हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित है ।
→ यह भारत मे मन्दिर के प्राचीनतम अवशेष माने जा सकते है ।
→ 1837 मे कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाडी से दो शिलालेख खोज निकाले ।
→ यह शिलालेख अशोक के है तथा बाहमी लिपि मे लिखे गए है इन्हे भाब्रू अभिलेख अथवा कलकता बैराठ अभिलेख के नाम से भी जाना जाता है ।
→ इन अभिलेखों मे अशोक बौद्ध धर्म ग्रहण करने की जानकारी मिलती है ।
→ बैराठ से एक स्वर्ण मंजूषा मिली है जिसमे संभवत बुद्ध के अस्थि अवशेष रहे होगें ।
→ चीनी यात्री हैनसांग भी बैराठ आया था उसने यहां 8 बौद्ध मठो का जिक्र किया है ।
→ हुण आक्रान्ता मिहिरकुल ने बैराठ का विध्वंस कर दिया था ।

नोटः– जयपुर शासक रामसिंह ने भी यहां उत्खनन करवाया था उस समय बैराठ का किलेदार किरतसिंह खंगारोत था ।

→ भीमसेन की डुंगरी पर एक गड्ढा है जिसमे पानी भरा रहता है । उसे भीमतला (भीमतालाब)भी कहा जाता है ।
बैराठ से शंख लिपि एवं शैलाश्रय चित्र भी मिले है ।

ईसवाल:– उदयपुर
उत्खननन– राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

विशेषताएँ:–
→ यह 5 स्तरों की सभ्यता है ।
→ मकान पत्थरों के द्वारा निर्मित है जिन्हे मिट्टी के गारे से जोडा गया है ।
→ यहां से 2000 वर्ष तक निरन्तर लोहा गलाने के साक्ष्य मिले है ।
→ मौर्यकाल, शुंगकाल एवं कुषाण काल मे लोहा गलाने की गतिविधियां संचालित होती है ।
यह एक प्राक ऐतिहासिक सभ्यता है तथा यहां से प्राप्त सिक्कों को प्रारम्भिक कुषाणकालीन माना जाता है ।

नगर (टोंक) –
– यहां पर 6000 मालव सिक्के प्राप्त हुए । एवं 1000 अन्य पात्रों के टुकडे मिले ।
– यहां पर लाला रंग के मृदपात्र मिले ।
– यहां के पात्रों पर मानव एवं पशुओं की आकृतियां मिली है ·
– यहां पर गुप्तोतर कालीन स्लेटी पत्थर से बनी महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा, पत्थर पर मोदक गणेश का अंकन एवं तीन फणधारी नागों का अंकन एवं कमल धारण किए हुए लक्ष्मी आदि उल्लेखनीय है ।

खुनारी (झुंझुनू) –
– कातली नदी के तट पर झुंझुनू मे स्थित ।
– खुनारी गांव में लोहा गलाने की भट्टियों के अवशेष मिले ।
– ये भारत की प्राचीनतम लोहा गलाने की भट्टियां है ।
– भट्टियों मे धौंकनी लगाने की व्यवस्था तापक्रम का नियंत्रण करने हेतु थी ।
– यहां से लोहे के तीन तीर, कृष्ण परिणर्जित मृदापात्र मिट्टी तथा पत्थर के मनके, चूडियां तथा मृण मूर्तियां, मातृदेवी की मृण मूर्तियां मिली है जिन्हें कुषाणकालीन माना जाता है ।
– भोजन में चावल का प्रयोग करते थे तथा घोडों से रथ खींचते थे ।
– ऐसा माना जाता है कि यहां वैदिक आर्यो ने बस्ती बसाई थी ।
– इसके अलावा धान संग्रह का कोठा भी मिला है ।
– इसके अलावा मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष भी मिले है ।

नगरी सभ्यता –
– चित्तौड के पास स्थित नगरी को पाणिनी की अष्टाध्यायी में उल्लेखित मध्यामिका माना जात है ।
– 1872 में क्लाइन ने इसकी खोज की ।
– 1920 में आर. जे. भंडाकर द्वारा एवं 1961 – 62 में केवी सौन्दर राजन द्वारा उत्खनन करवाया गया ।
– यहां से लेखयुक्त शिलाएं, महामूर्तियां, प्रतिमाएं, अलंकृत युक्त ईंटें आदि मिले है ।
– यहां से गुप्तकालीन मंदिर के अवशेष मिले है, जिसमें शिव की मूर्ति प्रतिष्ठापित थी ।
– यहां चार चक्राकार कुंएं गुप्तकालीन प्रकार के मिले है ·
– यहां ग्रीकों रोमन प्रभाव के शीर्ष, आहट एवं शिवि जनपद के सिक्के मिले है ।
– यह राजस्थान का सर्वप्रथम उत्खनित स्थल है ।

रैढ (टोंक) –
– टोंक जिले की निवाई तहसील में स्थित ।
– 1938 में के. एन पुरी द्वारा उत्खनन करवाया गया ।
– मिट्टी के मकान, लौह उपकरण, पाषाण के मनके एवं अनाज के दाने प्राप्त हुए ।
– यहां से 115 घेरेदार कूप एवं 3000 आहत मुद्राएं मिली है ।
– यहां से मालब तथा मिश्र शासकों एवं अपोलोडोट्स तथा इण्डोसीसेनियन सिक्के प्राप्त हुए है ।
– सीसे की मोहर पर ''मालव जनपदस्य'' ब्राह्मी लिपि में अंकित है ।
– एक सेलखडी की डिबियां मिली है जो बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे जाने के समान है ।
– यहां से मिले अवशेष ईसा पूर्व तीसरी एवं ईसा की दूसरी शताब्दी के है जो मौर्यकालीन एवं शुंगकालीन मान जाते है ।
– लोहे के अत्यधिक भंडार मिलने के कारण इसे ''प्राचीन राजस्थान/भारत का टाटानगर'' भी कहा जाता है ।

महाजनपदकाल : (16)

महानजनपदकाल को भारत की द्वितीय नगरीय क्रान्ति कहा जात हैं ।

I. मत्स्य महाजनपद:

- जयपुर तथा अलवर (द.प. भाग) जिले का भाग ।
- इसका ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलता हैं ।

राजधानी : विराटनगर

(विराटनगर का महाभारत में नाम मिलता हैं ।)

II. कुरू महाजनपद :

अलवर का उत्तरी भाग

राजधानी : इन्द्रप्रस्थ

III. शुरसैन महाजनपद :

भरतपुर + अलवर का पूर्वी भाग + करौली + धौलपुर

राजधानी : मथुरा

IV. शिवि जनपद:

वर्तमान चित्तौडगढ जिला (मेवाड का भाग)

राजधानी : माध्यमिका (नगरी)

- महाभारत तथा पतंजलि के महाभाष्य में माध्यमिका का नाम मिलता हैं ।

–राजस्थान में सबसे पहले उत्खनन माध्यिका का हुआ । (1904)

उत्खनन कर्ता : डी.आर. भण्डारकर

V. मालव जनपद :

- वर्तमान टोंक व जयपुर जिला राजधानी : नगर
- सर्वाधिक सिक्के नगर मालव जनपद के प्राप्त होते हैं । ये सिक्के रैढ (टोंक) नामक स्थान से प्राप्त हुये हैं ।

''प्राचीन भारत का टाटानगर''

- यहाँ का ''उत्खननकर्ता'': कैलाशनाथपुरी

VI. यौद्धेय जनपद :

- वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ जिला
- इस जनपद ने कुषाणों को भारत में आगे बढने से रोका था

VII. शाल्व जनपद : अलवर

VIII. अर्जुनायन जनपद : अलवर व सीकर (नीम का थाना वाला क्षेत्र)

IX. राजन्य जनपद : भरतपुर

मध्यकालीन इतिहास

(1) मेवाड का इतिहास:

परिचय

- मेवाड के प्राचीन नाम:
  मेवाड – उदयपुर, चित्तौड, भीलवाडा, राजसमन्द
  मेदपाट – मेर जनजाति के कारण
  प्रागवाट – प्राचीन नाम
  शिविजनपद – महाभारतकालीन नाम , इसकी राजधानी माध्यमिका / नगरी का उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य एवं गार्गी संहिता मे मिलता है ।

गुहिल वंश की उत्पति

566 ई. मे इस वंश की नींव गुहिल अथवा गुहादित्य ने रखी इसी के नाम पर इसके वंशज गुहिलोत कहलाये । इनकी उत्पति से संबंधित विभिन्न मत प्रचलित है ।

1. सूर्यवंशी मत – वीर विनोद ग्रंथ के रचियता श्यामल दास के अनुसार गुहिल विशुध्द क्षत्रिय है तथा भगवान राम के वंशज है
   वीर विनोद के अनुसार गुहिल वल्लभी (गुजरात) से आये है ।
   कर्नल जेम्स टॉड भी इन्हें वल्लभी के शासको से संबंधित मानता है ।
2. ब्राह्मण मत – आहड मे प्राप्त लेख के आधार पर डी. आर. भण्डारकर गुहिलों को ब्राह्मण मानते है तथा आनन्दपुर (गुजरात) से आया हुआ बताते है ।

गोपीनाथ शर्मा एवं मुहणोत नैणसी भी इस मत से सहमत है ।

नैणसी के अनुसार इस वंश की 24 शाखाएँ थी । इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे ।

3. विदेशी मत – अबूल फजल के अनुसार गुहिल ईरान के बादशाह नौसेखा आदिल के संतान है ।
   निष्कर्ष – गौरी शंकर हीरा चन्द्र ओझा इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय मानता है और यही मत सर्वमान्य है ।

मेवाड के शासक हिन्दुआ सूरज कहलाते है

यह विश्व का प्राचीनतम राजवंश है जिसने एक ही क्षेत्र पर सर्वाधिक समय तक शासन किया है ।

मेवाड के शासको का राजतिलक उन्दरी गाँव के भील सरदार करते है ।

मेवाड के राजचिन्ह मे मेवाड राणाओं के साथ भीलू का भी चित्रण किया गया है ।

मेवाड के शासक स्वयं को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते है तथा एकलिंगनाथ जी को मेवाड का वास्तविक शासक मानते है ।

मेवाड के राजचिन्ह मे "जो दृढ राखै धर्म को तिहि राखे करतार" पंक्तियाँ उत्कीर्ण है ।

पहला बडा राजा बापा रावल था ।

गुहिल

अन्य नाम – गुहादित्य
पिता – शीलादित्य
माता – पुष्पावती
पालन पोषण – कमलावती

गुहिलो का संस्थापाक / आदिपुरूष / मूलपुरूष आदि नामों से जाना जाता है ।

1. बापा रावल : 734 – 753

वास्तविक नाम – " कालभोज"

रणकपुर प्रशस्ति मे कालभोज एवं बप्पारावल को अलग आदमी बताया गया है ।

बापा रावल एक उपाधि थी ।

इसे मेवाड का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।

यह हारित ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि के आशीर्वाद से 734 ई. में मान मौर्य (चित्तौड का राजा) को हराकर चित्तौड पर अधिकार कर लिया ।

इसने नागदा (उदयपुर) को राजधानी बनाया ।

बापा रावल ने नागदा के पास कैलाशपुरी में एकलिंगजी का मन्दिर बनावाया, एकलिंगनाथ जी मेवाड के शासको के कुलदेवता है ।

बापा रावल ने मेवाड में खुद के नाम के सिक्के चलाये

राजधानी: नागदा, आहड, चित्तौड

बापा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए गजनी तक चला गया था । तथा वहां के राजा सलीम को हरा दिया तथा अपने भांजे को राजा बनाया ।

रावलपिंडी ;(Pak) शहर का नाम बापा रावल के कारण पडा ।

– सी.वी.वैद्य ने बापा रावल की तुलना फ्रांस का कमांडर चार्ल्स मार्टेल से की है ।

– मेवाड में सोने के सिक्के प्रारम्भ किये । (115 ग्रेन का सिक्का)

बपारावल के समाधि नागदा बनी हुई है जिसे बपारावल का स्मारक के नाम से जाना जाता है ।

उपाधियां –

1. हिन्दू सूरज
2. राजगुरू
3. चक्कवै (चारों दिशाओं को जीतने वाला)

2. अल्लट 951 – 971

मूल नाम – आलु रावल

इसने आहड (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाई

इसने आहड में वराह (विष्णु भगवान का अवतार) मन्दिर बनवाया

सबसे पहले मेवाड में नौकरशाही की स्थापना की ।
इसने हूण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की थी ।

3. जैत्र सिंह : (1213–53)

जैत्रसिंह का शासनकाल ''मध्यकालीन'' मेवाड का स्वर्णकाल था ।

भूताला का युद्ध (1227 ई. में) ''जैत्र सिंह'' v/s इल्तुतमिश के बीच हुआ इस युद्ध में जैत्रसिंह जीत गया लेकिन इल्तुतमिश ने नागदा (उदयपुर) को उजाड दिया था इसलिए जैत्रसिंह ने चित्तौड को अपनी राजधानी बनाया ।

इस युद्ध की जानकारी ''जयसिंह सूरी'' की किताब ''हम्मीर मद मर्दन'' से मिलती है ।

1248 में नसीरूदीन महमूद ने चित्तौड पर आक्रमण किया जिसमे जैत्र सिंह विजय होता है ।

4. रतन सिंह : (1302–03)

यह रावल शाखा का अंतिम शासक था ।
रतन सिंह की रानी पदमिनी थी जो सिंहल द्वीप के राजा गंधर्व सैन एवं चम्पावती के पुत्री थी ।
राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने पदमिनी की सुंदरता का वर्णन अल्लाउद्धीन खिलजी समक्ष किया, खिलजी ने पदमिनी को पाने हेतु चित्तौड पर आक्रमण किया लेकिन चित्तौड आक्रमण के वास्तविक कारण कुछ और थे ।

आक्रमण का कारण :

- अलाउदीन खिलजी की साम्राज्यवादी महत्वकांक्षा
- चित्तौड का सामरिक व व्यापारिक महत्व
- सुल्तान के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न था
- चित्तौड का बढता हुआ प्रभाव

25 अगस्त 1303 को चित्तौड का पहला साका होता है ।

रानी पदमिनी के नेतृत्व मे 1600 महिलाओं ने जौहर किया ।

रतन सिंह के नेतृत्व मे राजपूत योद्धाओं ने केसरिया किया ।

साका = जौहर (महिला) +.केसरिया (पुरूष)
इस युद्ध में (साके में) ''गोरा व बादल'' (रतन के सेनापति) लडते हुए मारे गये थे ।
सिसोदा गाँव का लक्ष्मण सिंह अपने सात पुत्रों सहित लडता हुआ मारा जाता है
खिलजी चित्तौड जीत लेता है । उसने चित्तौड का नाम खिज्राबाद कर अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंप दिया ।
1311 तक खिज्र खाँ चित्तौड रहता है तत्पश्चात वह किला मालदेव मुच्छाला को सौंपकर वापस चला जाता है ।
खिज्र खाँ ने गंभीरी नदी पर पुल बनवाया था ।
खिज्र खाँ ने यहाँ पर धाईबापीर की दरगाह का निर्माण करवाया । इस मकबरे के फारसी लेख में अलाउद्दीन खिलजी को ईश्वर की छाया और संसार का रक्षक बताया गया है ।
इस युद्ध में इतिहासकार अमीर खुसरो भी मौजूद था । जिसने इस युद्ध का वर्णन अपनी पुस्तक खजाईन – उल – फुतुह अथवा तारिख – ए – अलाई मे किया
1540 मे मलिक मोहम्मद जायसी ने अवधि भाषा मे पद्मावत ग्रंथ रचना की जिसमें अलाउदीन और पदमिनी का प्रेम अख्यान है ।
– जेम्स टॉड तथा मुहणोत नैणसी ने भी इस कहानी को स्वीकार किया ।
सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस कहानी को अस्वीकार किया ।
गौरा बादल चौपाई हेम रतन सूरी ने लिखी ।

5. हम्मीर: (1326–64) राणा हम्मीर

सिसोदा गाँव (राजस्थान) के हम्मीर ने बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड पर आक्रमण करके चित्तौड को जीत लिया ।
चूँकि यह सिसोदा गाँव से आया था अतः इसके वंशज सिसोदिया कहलाये ।
सिसोदा शासक राणा उपाधि का प्रयोग करते थे अतः मेवाड मे राणा शाखा की नींव पडती है ।
हमीर ने सिंगोली के युद्ध मे मुहम्मद बिन तुगलक को पराजित किया ।
इसने ''बरवडी'' (अन्नपूर्णा माता) माता का मन्दिर चित्तौड में बनवाया । यह मेवाड के गुहिल वंश की इष्टदेवी (बरवडी माता) थी ।
(मेवाड के गुहिल वंश की कुल देवी – बाणमाता)
हम्मीर की उपाधियाँ :
कीर्ती स्तंभ प्रशस्ति में हमीर को विषम घाटी पंचानन कहा गया है अर्थात विकट युद्धो मे सिंह के समान दिखाई देने वाला ।
रसीक पिरीया मे इसे एक वीर्य राजा बताया गया है ।
हमीर को मेवाड का उध्दारक भी कहते है ।

6. राणा लाखा (लक्ष सिंह) 1382 – 1421

जावर में चाँदी एवं शीशा की खान निकली ।

- इसके समय छीतर बन्जारे ने ''पिछोला झील'' का निर्माण कराया ।

इस झील के किनारे ''नटनी का चबूतरा'' है ।
कुम्भा हाडा (हाडी रानी का भाई) नकली बूंदी की रक्षा करते हुऐ मारा गया ।

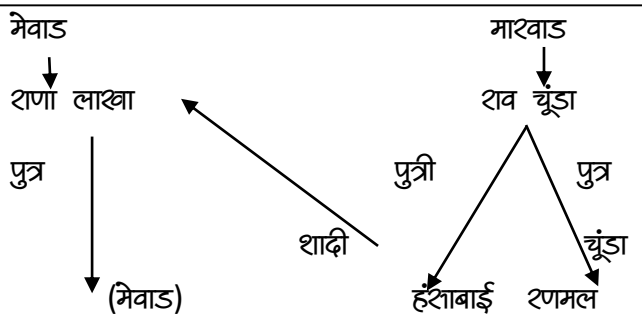

मारवाड के राव चूंडा की पुत्री हंसाबाई की शादी लाखा से इस शर्त पर होती है कि हंसा बाई से उत्पन्न पुत्र ही मेवाड का अगला शासक बनेगा, इस शादी को सम्पन्न कराने के लिए लाखा के पुत्र चुंडा ने आजीवन कुंवारा रहने की शपथ ली अतः चुंडा को "मेवाड/ राजस्थान का भीष्म पितामाह" कहा जाता है ।

7 राणा मोकल (1421–33) (हंसाबाई का बेटा)

कुंवर चुंडा मोकल का संरक्षक बनता है । हंसा बाई के अविश्वास की वजह से कुंवर चुंडा मालवा होशंग शाह के दरबार मे चला जाता है । अब हंसा बाई का भाई रणमल संरक्षक बनता है ।

1433 में गुजरात के शासक अहमद शाह के आक्रमण को विफल करने के लिए जब मेवाड की सेना ने जीलवाडा (राजसमंद) मे पडाव डाल रखा था तो चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मिलकर मोकल की हत्या कर दी ।

मोकल ने ''एकलिंगजी के मन्दिर की चारदीवारी'' का निर्माण करवाया एवं द्वारिकाधीश का निर्माण करवाया ।

मोकल ने 'भोज परमार' द्वारा बनवाया गया "त्रिभुवन नारायण मन्दिर" का जीर्णोद्धार करवाया जिसे वर्तमान में "मोकल का समीध्देश्वर मंदिर" के नाम से जाना जाता है ।

(8) राणा कुम्भा (1433–68)

- रणमल कुम्भा का संरक्षक था ।
- कुम्भा ने रणमल की सहायता से अपने पिता मोकल की हत्या का बदला लिया ।
- मेवाड दरबार में रणमल का प्रभाव बढ गया था । उसने सिसोदिया के नेता राघवदेव (चून्डा का भाई) जो मालवा गया था, की हत्या करवा दी ।
- हंसाबाई ने चुंडा को वापस बुलाया तथा भारमली रणमल की प्रेमिका की सहायता से रणमल की हत्या कर दी ।

इस समय रणमल का बेटा जोधा भी वहाँ मौजूद था जो भागकर काहुनी गाँव (बीकानेर) मे शरण लेता है ।

1453 में कुम्भा और जोधा के बीच ''आंवल – बांवल की सन्धि'' हुई ।

इस संधि द्वारा जोधा को मन्डोर (मारवाड की राजधानी) वापस दे दिया गया ।

सोजत (पाली) को मेवाड में मारवाड की सीमा बनाया गया,

इस संधि मे जोधा की पुत्री श्रृंगार कंवर की शादी कुंभा के पुत्र रायमल के साथ तय हुई ।

यह संधि हंसा बाई के मध्यस्था से सम्पन्न हुई थी ।

कुम्भा के शासनकाल के दौरान घटनाक्रम :

सारंगपुर का युद्ध (1437 ई.)

कुम्भा VS महमूद खिलजी 1 (मालवा M.P)

कारण : महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी । इस युद्ध में कुम्भा जीत गया खिलजी को बंदी बना लिया तथा इस जीत की याद में ''विजयस्तम्भ'' बनवाया ।

चाम्पानेर की सन्धि – (1456)

कुतुबुद्दीन शाह + महमूद खिलजी 1

(गुजरात) (मालवा)

उद्देश्य : कुम्भा को पराजित करना एवं कुम्भा का राज्य आपस मे बाँट लेना ।

1457 में बदनौर (भीलवाडा)मे कुम्भा ने इन दोनों की संयुक्त सेना को पराजित कर दिया ।

कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवडा को हराया ।

कुम्भा ने नागौर के उत्तराधिकारी संघर्ष में शम्स खाँ का साथ दिया , शम्स खाँ एवं मुजाहिद खाँ दोनो भाई थे ।

कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ :

स्थापत्य कला

1. विजयस्तम्भ (1440 -1448) :- ''सारंगपुर युद्ध'' में जीत की याद में चित्तौड के किले में बनवाया था ।

अन्य नाम: –कीर्ति स्तम्भ (कुम्भा की कीर्ति को बढाने वाला)

–विष्णु ध्वज (विष्णु भगवान को समर्पित)

–गरूड ध्वज (गरूड – विष्णु का वाहन)

–मूर्तियों का अजायाबघर

–भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष

यह 9 मंजिला इमारत है

लम्बाई–चौडाई :- $122 \times 30\ (feet)$

सीढियाँ – 156

वास्तुकार :- जैता (पिता), पूंजा, पोमा, नापा (पुत्र)

इसमें 9 मंजिल है जिसकी 8वी मंजिल मे कोई मूर्ति नही है ।

–विजयस्तम्भ में 3वी मंजिल में 9 बार ''अरबी भाषा'' में अल्लाह लिखा हुआ है ।
–''स्वरूप सिंह'' ने इसका पुनर्निर्माण करवाया था ।
–यह राजस्थान पुलिस व राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं अभिनव भारत संगठन का प्रतीक चिन्ह है ।
15 अगस्त 1949 को भारत सरकार ने इस पर एक रूपये का डाक टिकट जारी किया, यह राजस्थान प्रथम ईमारत है, जिस पर डाक टिकट जारी हुआ ।
इस पर कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति उत्कीर्ण की हुई है जिसके रचियता कवि अत्री व महेश है ।
–''जेम्स टॉड'' ने विजयस्तम्भ की तुलना ''कुतुबमीनार'' से की ।
–''फर्ग्यूसन'' ने विजयस्तम्भ की तुलना रोम के ''टार्जन टावर'' से की ।

जैन कीर्ति स्तम्भः (आदिनाथ स्तम्भ)
12 वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने बनवाया
7 मंजिला इमारत है , 75 फीट ऊँची है ।
यह भगवान आदिनाथ को समर्पित है , अतः आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता है ।

किले :–
कवि राजा श्यामलदास जी की पुस्तक वीर विनोद के अनुसार कुम्भा ने मेवाड के 84 किलों में से 32 किलो का निर्माण करवाया ।
(1) कुम्भलगढ :– (राजसमंद)
वास्तुकार – मण्डन
इस किले को मेवाड मारवाड का सीमा प्रहरी कहा जाता है ।
इसका सबसे ऊँचा महल कटारगढ है जो कुम्भा का निजी आवास था इसे मेवाड की आँख कहा जाता है ।
कुम्भलगढ प्रशस्ति का लेखक – महेश
इस प्रशस्ति में कुम्भा को धर्म एवं पवित्रता का अवतार कहा गया है
(2) अचलगढ (सिरोही)
1452 में कुम्भा ने इसका पुनर्निमाण करवाया ।
(3) बासन्ती दुर्ग – सिरोही
(4) मचान दुर्ग – मेरो पर नियंत्रण के लिए ।
(5) भोमत दुर्ग – भील जनजाति पर नियंत्रण हेतु ।

चित्तौड, कुम्भलगढ, अंचलगढ → में कुम्भस्वामी मन्दिर का निर्माण करवाया

चित्तौड में श्रृंगार चँवरी मन्दिर बनवाया ।
एकलिंगी मीरा मंदिर एवं सारणेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया ।

1439 में एक जैन व्यापारी ''धारणकशाह'' ने ''रणकपुर के जैन मन्दिर'' का निर्माण करवाया ।

यहाँ पर चौमुखा मन्दिर सबसे महत्वपूर्ण है इस मन्दिर में आदिनाथ भगवान की मूर्ति है । इसमें 1444 स्तम्भ है इसलिए इसे ''स्तम्भों का अजायबघर'' कहा जाता है ।
चौमुखा मन्दिर का वास्तुकार देपाक था ।

''कुम्भा'' को राजस्थान की ''स्थापत्य कला का जनक'' कहा जाता है ।

साहित्य :
कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ (वीणा) था ।
कुम्भा के संगीत गुरू ''सारंग व्यास'' थे ।
कुम्भा के अध्यात्मिक गुरू – हीरानंद
कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थ
–सुधा प्रबन्ध
–कामराज रतिसार
–संगीत सुधा
–संगीत मीमांसा
–संगीत राज
हरिवार्तिका
नृत्यरत्न कोष
नवीन गीत गोविन्द वाद्य
संगीत रत्नाकर
सुड प्रबंध
संगीत क्रम दिपिका

संगीतराज 5 भागों में विभाजित है :–
–पाठ्य रत्न कोष
–गीत रत्न कोष
–नृत्य रत्न कोष
–वाद्य रत्न कोष
–रस रत्न कोष

(पढिये, गाईये, नाचो आपको बाद्य रस मिल जायेगा)

- जयदेव की गीतगोविन्द पर ''रसिकप्रिया'' नाम से टीका लिखी ।
- कुम्भा ने ''चण्डी शतक'' पर भी टीका लिखी थी ।

- कुम्भा ने मेवाडी भाषा में 4 नाटक लिखे थे , कुम्भा तीन भाषाओं का ज्ञाता था, मेवाडी, मराठी और कन्नड ।
- कुम्भा ''वीणा'' बनाया करता था ।

कुम्भा के दरबारी विद्वान :

विद्वान	पुस्तक
1. कान्ह व्यास	एकलिंग महात्म्य – इसका प्रथम भाग स्वयं कुम्भ द्वारा रचित है, जो राजवर्णन कहलाता है ।
2. मेहा जी	तीर्थमाला
3. मण्डन	वास्तुसार देवमूर्ति प्रकरण राजवल्लभ रूपमण्डन – मूर्तिकला के बारे में कोदण्डमण्डन – धनुष निर्माण के बारे में शकून मण्डन प्रसाद मण्डन वैद्य मण्डन वास्तु मण्डन
4. नाथा (मण्डन का भाई)	वास्तुमंजरी
5. गोविन्द (मण्डन का बेटा)	द्वार दीपिका उद्धार धोरिणी कला निधि सार समुच्चय
6. रमा बाई (कुम्भा की बेटी)	– वागीश्वरी नाम से कविताएं लिख करती थी कुम्भा ने इसे जावर का परगना जागीर मे दिया था ।
7. तिला भट्ट 8. हीरानन्द मुनि	
कुम्भा के गुरू, कविराजा की उपाधि कुम्भा ने दी ।	
9. सोमदेव 10. सोम सुन्दर 11. जयशेखर 12. भुवन कीर्ति	→ जैन मुनि

कुम्भा ने आबू जाने वाले जैन तीर्थ यात्रियों से कर लेना बन्द कर दिया था ।

कुम्भा की उपाधियाँ :

1. हिन्दु सुरताण	(मुसलमानों को हराने के कारण)
2. अभिनव भरताचार्य	(संगीत की उपलब्धियों के कारण)
3. राणा रासौ / राय रायण / राय रासौ	(रासौ – साहित्य)
4. हालगुरू	(पहाडियों के दुर्ग जीतने के कारण)
5. चाप गुरू	(एक अच्छा धनुधर होने के कारण)
6. छाप गुरू	(छापामार (गुरिल्ला) युद्ध करने के कारण)
7. परम भागवत	विष्णु, गुप्त
8. आदि वराह	गुर्जर प्रतिहार
9. दान गुरू –	दानी शासक
10. अश्वपति	श्रेष्ठ घुरसवार
11. नरपति	मानवों मे श्रेष्ठ
12. राज गुरू	राजाओं मे श्रेष्ठ

कुम्भा को संगीत विश्वंभरों भी कहा जाता है ।

Note : कुम्भा को उन्माद रोग हो गया था, उसकी हत्या उसके बेटे ''ऊदा'' ने कुम्भलगढ के किले में कर दी थी ।

13. राणा संग्राम सिंह (सांगा) – (1509–28) :

सांगाा का अपने भाईयों के साथ उत्तराधिकारी का झगडा होने पर सांगा भागकर सेवन्त्री गांव मे रूपनारायण जी के मंदिर मे शरण लेता है , यहां बीदा जैतमालोत सांगा की उडना राजकुमार पृथ्वी राज से (सांगाा का भाई) रक्षा करता हुआ मारा जाता है ।
यहां से सांगा जान बचाकर श्रीनगर (अजमेर) मे करमचंद पंवार के यहां शरण लेता है ।
कलान्तर में सांगा का भाई पृथ्वीराज एवं जयमल की मृत्य हो जाती है , सांगा मेवाड का शासक बनता है ।

खातोली का युद्ध (कोटा) – 1517
सांगा V/s इब्राहिम लोदी (दिल्ली का सुल्तान)
सांगा जीत गया

बाडी का युद्ध (धौलपुर) – 1519
सांगा V/s इब्राहिम लोदी
सांगा जीत गया

गागरौन का युद्ध (झालावाड) – 1519
सांगा + मेदिनी राय v/s महमूद खिलजी (द्वितीय)
(मालवा, M.P)
सांगा जीत गया
कारण : गागरौन का किला इस समय सांगा के दोस्त चन्देरी (M.P) के राजा मेदिनीराय के पास था ।
ईडर का उत्तराधिकारी संघर्ष – 1520
राणा सांगा v/s मुजफर शाह 2 गुजरात

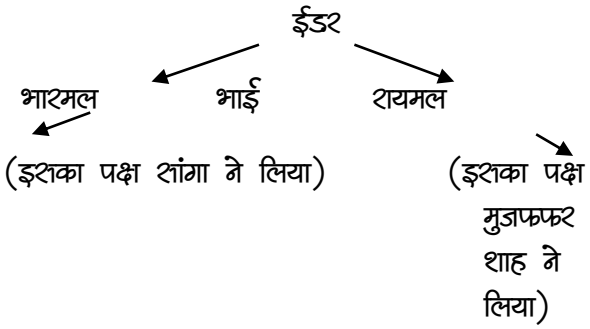

बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527ई.) :
(भरतपुर)
सांगा V/s बाबर
बाबर को हराया
इस समय किले का रक्षक मेहन्दी ख्वाजा (बाबर का सेनापति) था ।
बाबर ने मोहम्मद सुल्तान मिर्जा के नेतृत्व में सेना भेजी ।

खानवा का युद्ध : (रूपवास तहसील भरतपुर) :

खानवा युद्ध मे बाबर विजय होता है, बाबर के विजय के निम्न कारण थे –
(वीर विनोद श्यामदास के अनुसार 16 March)
बाबर ने जिहाद की घोषणा की । (धर्मयुद्ध)
– बाबर ने शराब न पीने की कसम खाई व अपने चांदी के सारे पात्र तोड दिये ।
बाबर ने इस युद्ध मे तुलुगमा पद्धित अपनाई ।
हिंदुस्तान मे सर्वप्रथम तोपों का प्रयोग किया ।
– बाबर ने मुस्लिम व्यापारियों से तमगा कर हटा दिया ।
बाबर ने इस युद्ध मे गाजी की उपाधि धारण की ।

इस युद्ध से पूर्व सांगा ने भी राजपुताना की समस्त रियासतों को युद्ध में शामिल होने हेतु आमंत्रित किया जिसे पाती परवन की रस्म कहा जाता है, इस युद्ध में राजपुताना के निम्न शासक शामिल हुए

प्रमुख राजा जो युद्ध में शामिल हुये :–

1. आमेर – पृथ्वीराज
2. मारवाड – मालदेव (गंगा (राजा) का बेटा)
3. बीकानेर – कल्याणमल (राजा – जैतसी)
4. मेडता – वीरमदेव
5. चन्देरी – मेदिनीराय
6. सलूम्बर – रतनसिंह चूण्डावत
7. वागड – उदयसिंह
8. देवलिया – वाघ सिंह
9. मेवात – हसन खाँ मेवाती
10. ईडर – भारमल
11. इब्राहिम लोदी का छोटा भाई महमूद लोदी
12. सिरोही – अखेय राज देवडा
13. बिजोलिया – अशोक परमार
14. काठियावाड – झालाअजजा
15. गोगुंदा – झाला सजजा
16. जालौर – अखेय राज सौनगरा

युद्ध में राणा सांगा के आंख मे तीर लग जाता है, राव मालदेव घायल सांगा को युद्ध स्थल से बाहर ले जाता है ।
सांगा युद्ध में घायल हो गया अतः ''झाला अज्जा'' ने युद्ध का नेतृत्व किया । परन्तु बाबर युद्ध जीत गया था । जीतने (खानवा का युद्ध) के बाद बाबर ने ''गाजी की उपाधि'' (धर्म के लिए लडना) धारण की ।
– ''बसवा (दौसा)'' में सांगा का इलाज किया गया । (यहां सांगा की छतरी को निर्माण राजा पृथ्वीराज कच्छवहा ने करवाया)
– सांगा चंदेरी के मेदिनीराय की सहायता के लिए आगे बढा
– ''ईरिच (M.P)'' नामक स्थान पर कालपी के पास सांगा के साथियों ने उसे जहर दे दिया और उसकी मृत्य हो गयी ।
– ''मांडलगढ (भीलवाडा)'' में सांगा की छतरी है ।

सांगा की उपाधियाँ :

1. हिन्दुपत
2. सैनिको का भग्नावशेष (उसके शरीर पर 80 घाव थे)

Note:

- सांगा का बडा बेटा भोजराज था जिसकी शादी मीराबाई के साथ हुई थी ।
- सांगा के बाद रतनसिंह राजा बना । परन्तु यह बूँदी के राजा सूरजमल के साथ लडते हुए मारा गया था

1. विक्रमादित्य (1531–36) :

- कम उम्र में राजा बना था इसलिए इसकी माता ''कर्मावती'' इसकी संरक्षिका बनी ।
- 1533 में गुजरात के शासक ''बहादुर शाह'' ने मेवाड पर आक्रमण किया, लेकिन कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली ।
- 1534 में बहादुर शाह ने पुनः आक्रमण कर दिया । लडाई के लिए सक्षम न होने के कारण कर्मावती मुगल बादशाह हुमायँ को राखी भेजकर सहायता मांगती है ।
- लेकिन हुमायुँ के आने से पहले ही मेवाड में ''दूसरा साका'' हो जाता है ।
  रानी कर्मावती के नेतृत्व में 1300 महिलाओं ने

जौहर किया, देवलिया के रावत बाघ सिंह के नेतृत्व मे राजपूत योद्धाओ ने केसरी किया ।
रावत बाग सिंह की छतरी रामपोल के पास बनी हुई है, जिसे देवलिया दिवान के नाम से जाना जाता है । यह चित्तौड का दूसरा साका था ।
– हुमायु से डर कर बहादुर शाह चित्तौड से भाग गया । तथा हुमायुँ दिल्ली वापस लौट गया ।
विक्रमादित्य अल्पव्यस्क था अतः वनवीर को संरक्षक बनाया गया (वनवीर पृथ्वीराज की दासी से उत्पन्न पुत्र था ।)
वनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी
ज बवह उदय सिंह की हत्या का प्रयास करता है तो पन्नाधाय अपने पुत्र चंदन की बलि देकर उदय सिंह को बचाकर केलवा की जागीर से होते हुये कुम्भलगढ पहुंचती है, यहा का किलेदार आशादेवपुरा इनको शरण देता है ।
बनवीर को चित्तौड मे तुलजा भवानी का मंदिर बनाया
बनवीर ने चित्तौड नव कोठा एवं नवलक्खा महल बनाये ।

2. उदयसिंह (1537–72)

1537 मे राव मालदेव के सहयोग से कुम्भल गढ मे उदय सिंह का राजतिलक होता है ।
अखैं राज सौन्दरा ने अपनी पुत्री जयवन्ता बाई की शादी उदय सिंह से की ।
– 1540 में मावली के युद्ध (उदयपुर) में राव मालदेव के सहयोग से बनवीर को हराकर उदयसिंह राजा बन गया ।
1557 मे हरमाडा के युद्ध में अजमेर के सुबेदार हाजी खाँ पठान से युद्ध करता है (जिसे मालदेव का सहयोग प्राप्त था)
1543 में शेरशाह सूरी के आक्रमण की सूचना पाकर किले की कुँजियाँ (चाबियाँ) शेरशाह सूरी के पास भिजवा देता है । सूरी ने ख्वास खां को मेवाड को प्रशासक नियुक्ति किया ।
– ''1559'' में उदयसिंह ने ''उदयपुर की स्थापना'' की तथा यहाँ पर ''उदयसागर झील'' का निर्माण करवाया ।
1567 अक्टूबर में अकबर ने मेवाड पर आक्रमण कर दिया ।
उदय सिंह किले का भार जयमल मैडतियां एवं फत्ता सिसोदिया के कन्धों पर छोडकर स्वयं गिरवा के पहाडियों मे चला जाता है ।
– इस समय चित्तौड का ''(तीसरा)'' साका हुआ
यह साका ''जयमल (पहले मेडता का शासक था जिसे 1562 में अकबर ने छीन लिया था तथा ये उदयसिंह के पास आ गया था) व फत्ता के नेतृत्व में हुआ था ।''
फुले कंवर चुंडा के नेतृत्व में महिलाओं ने जौहर किया
(जयमल अकबर की संग्राम नामक बंदूक से घायल होने के कारण कल्ला राठौड के कन्धों पर बैठकर युद्ध करता है । इसलिए ''कल्ला राठौड को चार हाथो वाला लोक देवता'' कहा जाता है ।)
फत्ता सिसोदिया की छतरी रामपोल के पास बनी हुई है तथा जयमल एवं कल्ला मैडतियां की छतरी हनुमान पोल एवं भैरव पोल के बीच मे बनी हुई है ।
उदय सिंह को खोजने हेतु अकबर ने हुसैन कुल्ली खां को भेजा 24 फरवरी 1568 को मेवाड का तीसरा साका सम्पन्न हुआ

25 फरवरी 1568 को अकबर को चित्तौड पर अधिकार हो गया ।
– अकबर ने इस किलें में (चित्तौड) 30,000 लोगों का नरसंहार करवाया
– अकबर जयमल व फत्ता की वीरता से प्रसन्न होकर इनकी मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई थी जिसे बाद में औरंगजेब ने तुडवा दिया था ।

- बीकानेर के जूनागढ किले में राय सिह ने भी इन दोनों की मूर्तियाँ लगवाई हुई
- इसके बाद उदयसिंह ने ''गोगुन्दा (उदयपुर)'' को अपनी राजधानी बनाया यहीं पर इसकी 28 फरवरी 1572 ई. को मृत्यु हो गई तथा यही पर उसकी छतरी हैं ।

3. महाराणा प्रताप – (1572–97)
(लगभग 25 साल राजा रहा)
राजमहलों की क्रांति

उदय सिंह को अपनी भटियानी रानी धीर कंवर से विशेष अनुराग था । अतः राणा प्रताप को शासक न बनाकर जगमाल को अपना उत्तराधिकारी बनाया ।
कृष्णदास चूंडावत ने जगमाल को हराकर राणा प्रताप को मेवाड का शासक बनाया ।
– मेवाड के सामन्तों ने जगमाल को हटाकर प्रताप का राजतिलक गोगुन्दा में कर दिया था ।
– लेकिन प्रताप ने ''कुम्भलगढ के किले'' में दुबारा अपना विधिवत् राजतिलक करवाया ।
जन्मः 9 मई 1540 (कुम्भलगढ किले में)
माता : जयवन्ताबाई सोनगरा
रानी : अजबदे पंवार
बचपन का नाम – कीका (छोटा बच्चा)

हल्दी घाटी का युद्ध – (1576)

गोपीनाथ शर्मा के अनुसार इस युद्ध की तिथि 21 जून है लेकिन राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पुस्तक मे 18 जून है ।
अकबर ने प्रताप को अपने अधीन करने के लिए 4 प्रतिनिधि मंडल भेजे थे ।

1. जलाल खाँ कोरची
   (नवंबर 1572)
2. मानसिंह (आमेर का राजकुमार)
   (जून 1573 अमर काव्य के अनुसार उदय सागर झील की पाल पर राणा से मुलाकात)
3. भगवन्त दास (आमेर का राजा)
   (अक्टूबर 1573)
4. टोडरमल (अकबर का वित्त मंत्री)
   (दिसंबर 1573)

मानसिंह जब मिलने आया था प्रताप सिंह ने अपने बेटे अमर सिंह को भेजा था । वह खुद नहीं आया ।
इन चारों के भेजने से भी प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं कि इस कारण हल्दीघाटी का युद्ध हुआ ।

हल्दीघाटी का युद्ध (राजसमन्द) : (18 जून 1576)

अकबर के सेनापति = मानसिंह , आसफ खाँ
मानसिंह का यह पहला स्वतंत्र अभियान था । इस युद्ध से पूर्व मुगल सेना ने मांडल गढ मे रहकर युद्ध की तैयारी की थी । कुछ माह की तैयारी के बाद मुगल सेना राजसमंद के मोलेला गांव मे पडाव डालती है ।
जब राणा प्रताप ने यह समाचार सुना तो वह भी सेना सहित लोसिंह गांव मे अपना पडाव डालता है ।
मुगलों के तरफ से हरावल का नेतृत्व जगमाल कच्छवाह कर रहा था ।
मेवाड की तरफ से हरावल का नेतृत्व हाकिम खां सूर एवं पूंजा भील कर रहे थे ।
18 जून 1576 अल सुबह युद्ध की रण भेरी बज उठती है । राजपूतो का पहला वार इतना जोशीला था । कि मुगल सेना के पांव उखडने लगे ।
–''मिहतर खाँ'' ने मुगलों की भागती हुई सेना को प्रोत्साहित किया था कि अकबर रणभूमि में आ रहा है । भागते मुगल सैनिक बनास नदी के काठे मे स्थित संकरी घाटी जिसे रक्ततास अथवा हल्दी घाटी कहते है, में आ डटे ।
महाराणाप्रताप मुगल सेना को चीरते हुये वायु के वेग से मानसिंह के पास जा पहुंचे प्रताप ने अपने भाले से मानसिंह पर प्रहार किया , प्रताप का भाला महावत को चीरता हुआ हौदे से जा टकराया, मानसिंह बडे मुश्किल से बिजली सा तीव्र प्रहार से बचाया , लेकिन हाथी के सूंड मे बंधे खंजर से चेतक घायल हो जाता है । घायल चेतक को राणा प्रताप युद्ध स्थल से बाहर ले जाते है ।
राणा की अनुपस्थिति में झाला बीदा ने राणा का छत्र धारण कर मेवाडी सेना का नेतृत्व किया । चेतक की समाधि बालीचा गांव मे बनी हुई है ।
इस युद्ध मे अलबदायुँनी मौजूद था । जिसने इस युद्ध का वर्णन मुंतक – उत – तवारिख नामक पुस्तक मे किया है । दोपहर होते – होते यह युद्ध अनिर्णित समाप्त होता है । मानसिंह गोगुंदा की तरफ चला जाता है । प्रताप कुम्भलगढ की तरफ ।
यह युद्ध हाथियों के लिए भी प्रसिद्ध था । मेवाड की तरफ से लूणा और रामप्रसाद हाथी लडे । अकबर की तरफ से गजमुक्त, रणमदार, गजराज हाथी लडे ।
मनसिंह के हाथी का नाम मरदाना था ।